उपसंहार

मृदुला गर्ग के 'ग्लेशियर से' तथा 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह में चित्रित नारी जीवन का विवेचन, विश्लेषण करना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

साठोत्तरी महिला लेखिकाओ में मृदुला गर्ग एक सिद्धहस्त कहानीकार मानी जाती हैं। प्रथम अध्याय के अंतर्गत उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनका संपूर्ण जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है। लेखिका का जन्म, बचपन, माता-पिता, शिक्षा, विवाह, लेखन आदि की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की है। सन 1938 में जन्मी मृदुलाजी कलकत्ता के जैन परिवार से संबंधित है। मृदुला गर्ग के परिवार की जानकारी देते हुऐ उनके माता-पिता, भाई-बहन आदि के बारे में भी जानकारी प्रस्तुत की है, जिससे उनके परिवारिक माहौल का परिचय प्राप्त होता है। मृदुला जी का स्वभाव बचपन में अंतर्मुखी था। कॉलेज के अंतिम दिनों में उनका यह स्वभाव परिवर्तित होता गया।

मृदुला गर्ग की माँ रविकांता जैन मैट्रिक पास थी और साहित्य में रूचि रखती थी। पिता वीरेंद्रप्रसाद जैन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष तथा स्वतंत्र सेनानी थे। वे अर्थशास्त्र में एम.ए. तथा एल.एल.बी.थे। वे भी साहित्य में गहरी रूचि रखते थे।

मृदुला बचपन में कमजोर प्रकृति के कारण हमेशा बीमार रहती थी। उन्हें बचपन से ही किताबें पढने की आदत होने कारण बड़े-बड़े रूसी लेखकों की लोकप्रिय रचनाएँ उन्होंने पढ़ी थी। मृदुला गर्ग ने मिसंडा हाउस कॉलेज से बी.ए. ऑनर्स किया तथा विश्वविदयालय में अर्थशास्त्र विषय में दूसरा कम्र प्राप्त किया। इस सफ्लता के कारण उन्हें दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स से छात्रवृत्ति मिली।

मृदुला के परिवार में लड़का-लड़की ऐसा भेद न होने के कारण चार बहने और एक भाई ने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाया है। सभी उच्च शिक्षा से विभुषित हैं। मृदुला पर उनकी माँ का विशेष प्रभाव रहा। मृदुला के लेखिका बनने में उनके पिताजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

मृदुला ने परस्पर पसदंगी के अनुसार सन 1963 में प्रेमविवाह किया था। विवाह के बाद तीन बरस तक उन्होने व्याख्याता के रूप में काम किया। उनके दो पुत्र हैं। विवाह के बाद वह पति के साथ सन 1974 तक दिल्ली के बाहर कर्नाटक, बिहार, बंगाल के औदयोगिक क्षेत्रों में रही।

बचपन से ही वैचारिक स्वतंत्रता होने के कारण उनका व्यक्तित्व स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ है। माता-पिता दोनों के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा है। साथ ही लेखक जैनेंद्रकुमार को वह अपना गुरू बंधु मानती हैं। मृदुला के व्यक्तित्व से मिलती-जुलती नायिकाएँ उनके साहित्य में प्रतिबिंबित हुई हैं।

मृदुला गर्ग बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखिका हैं। अत: उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी

लेखनी चलाई है। उपन्यास, कहानी, नाटक, अनुवाद, संपादक के रूप में लेखन कार्य किया है। उनके अबतक दस कहानीसंग्रह और छः उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उन्होने लेखन के साथ संपादन का कार्य भी किया है। उनके उपन्यास तथा कहानी साहित्य का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। वह अब तक अनेक पुरस्कारों से सन्मानित हो चुकी हैं। उनके साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वह नारी स्वतंत्रता की हिमायती रही हैं। अत: उनके लेखन का केंद्रीय विषय भी नारी है।

समकालीन महिला कहानीकारों में शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, राजी सेठ, मालती जोशी, चित्रा मुद्गल, कृष्णा अग्निहोत्री आदि अनेक कहानीकारों के कहानी साहित्य का संक्षिप्त परिचय इस अध्याय में प्रस्तुत किया है। समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग के स्थान को निश्चित किया है। इस प्रकार प्रथम अध्याय में कहानीकार मृदुला गर्ग और समकालीन महिला कहानीकारों का विवेचन प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मृदुला गर्ग की कहानियों का वस्तु-तत्व के आधारपर विवेचन किया है। कहानी के तत्वों में वस्तु-तत्व यानी कथावस्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं प्रमुख तत्व माना जाता है। अत: प्रस्तुत अध्याय में कहानी के तत्वों में कथावस्तु के महत्त्व का संक्षिप्त विवेचन दिया है। तत्पश्चात मृदुला गर्ग के ग्लेशियर से कहानी संग्रह की प्रत्येक कहानी की संक्षिप्त कथावस्तु प्रस्तुत की है। इस कहानी संग्रह में कुल मिलाकर सोलह कहानियाँ संकलित हैं। इस कहानी संग्रह की 'ग्लेशियर से', 'झूलती कुर्सी', 'तुक', 'होना', 'खरीदार', 'खाली', 'अदृश्य' आदि कहानियाँ नारी प्रधान कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानियों में नारी जीवन से संबंधित समस्याओं की विस्तृत कथावस्तु का गढ़न लेखिका ने किया है। लेकिन 'प्रतिध्वनि', 'संज्ञा', 'सार्त्र कहता है', 'अन्धकूप में चिराग' आदि कहानियों में पारिवारिक संवेदनाओं का कम तथा व्यक्तिगत भावनाओं का अधिक चित्रण हुआ है। 'शहर के नाम' कहानी संग्रह में आधुनिक युग में नारी की स्थिती का तथा अनेक नारी समस्याओं का यथार्थ चित्रण कथावस्तु के माध्यम से किया है। इस कहानी संग्रह की रचनाओं के माध्यम से भारतीय परिवेश में नारी जीवन के बहुरंगी रूपों का चित्रण हुआ है। लेखिकाने वर्तमान परिवेश में नारी-चेतना की विविध प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रयास हर कहानी की कथावस्तु में किया है।

तृतीय अध्याय में मृदुला गर्ग के विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में प्रमुख नारी पात्रों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में प्रथम कहानी में पात्र एवं चरित्र-चित्रण तत्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। उसके बाद 'ग्लेशियर से' और 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह की प्रत्येक कहानी में चित्रित प्रमुख नारी के चरित्र पर प्रकाश डाला है। इन कहानीसंग्रह की अधिकांश कहानियों में नारी ही प्रमुख पात्र है। अत: यह कहानियाँ नारीप्रधान हैं। इनमें नायक का अभाव रहा है। कुछ कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी हुई हैं। अत: उसमें नायिका के नाम का उल्लेख नहीं मिलता। इसमें 'अक्स', 'विलोम', 'होना', 'संगत'

आदि कहानियों का समावेश होता है। अन्य कहानियों में नायिका को नाम से संबोधित किया है- 'तीन किलो की छोरी' की शारदाबेन, 'करार' की चैरी, 'अनाडी' की सुवर्णा, 'बाहरीजन' की नंदिनी, 'चक्करघिन्नी' की लेखा तथा विनिता, 'वह मैं ही थी' की उमा 'रेशम' की हेमवती, 'ग्लेशियर से' की मिसेस दत्ता यानी उषा भटनागर 'झुलती कुर्सी' की शेफाली, 'तुक' की मीरा, 'खरीदार' की नीना 'अदृश्य' की वीणा आदि । मृदुला गर्ग ने अपनी इन कहानियों में उच्च, मध्य, तथा निम्न वर्ग की नारी पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है । इन नारी पात्रों के चरित्रों को अनेक कोनों से उद्घाटित कर नारी की व्यथा पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य केवल प्रमुख नारी पात्रों का चरित्र-चित्रण करना रहा है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है। हिंदी साहित्य में नारी के विविध रूप किस प्रकार चित्रित हुए हैं इसका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है। मृदुला गर्ग के 'ग्लेशियर से', 'शहर के नाम' कहानी संग्रह में चित्रित नारी के पारिवारिक तथा अन्य विविध रूपों पर प्रकाश डाला है। मृदुला गर्ग की अधिकांश कहानियों में नारी ही प्रमुख पात्र है। अत: वे सभी पात्र नारी के अलग-अलग रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: प्रस्तुत कहानियों में चित्रित नारी के पारिवारिक तथा परिवारेतर विभिन्न रूपों की विस्तृत चर्चा की है। पारिवारिक रूपों के अंतर्गत माता, पत्नी, बेटी, बहू, सास, प्रेमिका आदि विविध परंपरागत रूपों का चित्रण किया है। माता रूप में विवश माँ, बेटी के भविष्य के प्रति चिंतित माँ, असफल आदर्श माँ, बेटी की विवाह की चिंता करनेवाली माँ, आदि रूपों चित्रण किया है। पत्नी रूप में असफल आदर्श पत्नी, पति के लिए त्याग करनेवाली, पतिद्वारा पीड़ित, पति के रूचि-अरूचि के अनुसार खुद को बदलनेवाली, परिवार चलानेवाली पति के प्रेम से वंचित पत्नी आदि रूपों में चित्रण किया है। साथ ही प्रस्तुत कहानियों में नारी के व्यावसायिक रूपों का चित्रण किया है। इसमें हार्ट स्पेशालिस्ट, अनुसंधाता, सहाय्यक कमीशनर, नौकरानी, लेक्चरर, चित्रकार आदि व्यावसायों में काम करनेवाली नारी का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानियों में मृदुला गर्ग ने नारी के आदर्शात्मक रूप का चित्रण किया है। लेकिन वह भी यथार्थ के अधिक निकट है। संक्षेप में समकालीन महानगरीय नारी के लगभग सभी रूपों का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है।

पंचम् अध्याय में मृदुला गर्ग के 'ग्लेशियर से' तथा 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह की कहानियों में चित्रित विविध नारी समस्याओ पर प्रकाश डाला है। साथ ही विभिन्न युगों में नारी की स्थिती पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला है। साठोत्तरी युग की कहानियों में नारी चित्रण अधिक खुलकर हुआ है। अत: नारी की यथार्थ स्थिती का चित्रण इस युग कि लेखक तथा लेखिकाओं ने किया है। आधुनिक युग में भी नारी की स्थिती में कुछ विशेष बदलाव नहीं हुआ है। अत: आज भी नारी समस्याग्रस्त दिखाई देती है। अत: आज भी नारी समस्याग्रस्त दिखाई देती है। मृदुला गर्ग की अधिकांश कहानियों का केंद्रीय विषय नारी है। लेखिका मृदुला

गर्ग स्वयं एक नारी होने के कारण नारी जीवन की हर समस्या का बड़ी गहराई से चित्रण किया है। समकालीन महानगरीय नारी की लगभग सभी समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत कहानियों में हुआ है। मृदुला गर्ग ने निम्न वर्ग की अशिक्षित श्रमजीवी नारी से लेकर उच्चवर्ग की उच्चशिक्षित नारी तक सभी वर्ग की नारियों की समस्याओं का विश्लेषित किया है। प्रस्तुत कहानियों का प्रत्येक नारी पात्र किसी-न-किसी समस्या से ग्रस्त दिखाई देता है। इनमें नारी जीवन से जुड़े अनगिनत यक्ष प्रश्नों की ओर इशारा किया है, जो अनंतकाल से चलती आ रही हैं और आज भी समस्या के रूप में विद्यमान हैं। इसमें कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो नारी जीवन के साथ परंपरा से जुडी हुई हैं और कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो आधुनिक युग में नारी के सामने आ टपकी हैं। मृदुला गर्ग ने इन दोनों प्रकार की नारी समस्याओं को अत्यंत सशक्त क्तप में उठाया है।

अशिक्षित नारी की समस्या, कन्याजन्म, निसंतान नारी, दहेज, पतिद्वारा पीड़ित नारी, वैदयकीय असुविधा, आर्थिक समस्या, आदि नारी की परंपरागत समस्याओं के साथ पारिवारिक विघटन, कामकाजी नारी, शिक्षित नारी, घुटन और अकेलापन, प्रौढ़ अविवाहिता, असफल प्रेम, यौन शौषण, अवैध यौन संबंध, आर्थिक समस्या आदि महानगरीय नारी की आधुनिक समस्याओं को भी उठाया है। इस प्रकार नारी जीवन की लगभग अधिकांश समस्याओं को मृदुला गर्ग ने प्रस्तुत कहानियों में चित्रित किया है। मृदुला गर्ग ने नारी की हर समस्या की जड़ उसकी आर्थिक पराधीनता को ही माना है। अत: उन्होंने नारी को हर समस्या से मुक्त होने के लिए आर्थिक स्वयंपूर्णता आवश्यक मानी है। वह स्वयं नारी स्वतंत्रता की हिमायती होने के कारण हर समस्या को उन्होंने नारीवादी दृष्टी से उठाया है। नारी अगर सभी समस्याओं से अपनी मुक्ति चाहती है तो उसे मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक दृष्टी से सबल बनना आवश्यक है।

उपलाब्धियाँ :-

मृदुला गर्ग के 'ग्लेशियर से', 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह की कहानियों को लेकर प्रस्तुत शोध कार्य शुरू करने से पूर्व मेरे मन में जो सवाल खड़े हुए थे उसके यथातथ्य जवाब मेरे शोध कार्य के दौरान प्राप्त हुए हैं।

मृदुला गर्ग की कहानियाँ नारी विमर्श की कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानियों के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है, कि यह पूर्णत: नारी के वजूद से जुड़े सवालों को उठानेवाली कहानियाँ हैं। मृदुला गर्ग ने प्रत्येक कहानी में नारी विमर्श पर जोर दिया है। अत: हर कहानी की नायिका के माध्यम से हर वर्ग की नारी का अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रण कर उसकी यथार्थ स्थिति से ज्ञात कराने की कोशिश की है।

अनुसंधान की नई दिशा :-

मृदुला गर्ग के कहानी साहित्य को लेकर अनुसंधान की कुछ नई दिशाएँ हैं। मेरी दृष्टि से निम्नांकित विषयों को लेकर और भी शोध कार्य हो सकते हैं -

1. नारी विमर्श की दृष्टि से मृदुला गर्ग की कहानियों का मूल्यांकन।
2. मृदुला गर्ग की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन।
3. मृदुला गर्ग की कहानियों का अनुशीलन।
4. मृदुला गर्ग के समग्र कहानी साहित्य में चित्रित नारी समस्याएँ।

- संदर्भ-ग्रंथ सूची -

मृदुला गर्ग की रचनाएँ

उपन्यास साहित्य

अ.	उपन्यास	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1.	वंशज	हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली	1973
2.	उसके हिस्से की धूप	राजकमल पेपर प्रकाशन, दिल्ली	1974-75
3.	चित्तकोबरा	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1978
4.	अनित्य	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1979-80
5.	मैं और मैं	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1984
6.	कठगुलाब	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1996

कहानी संग्रह

अ.	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1.	कितनी कैदें	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली	1975
2.	टुकडा-टुकडा आदमी	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1977
3.	डेफोडिल जल रहे हैं	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1978
4.	ग्लेशियर से	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1980
5.	उर्फ सैम	राजकमल पेपर प्रकाशन, दिल्ली	1986
6.	शहर के नाम	ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	1990
7.	मेरे देश की मिट्टी : अहा !	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	2001
8.	समागम	सामयिक प्रकाशन, दरीयागंज, नई दिल्ली	2004
9.	हरी बिंदी	सामयिक प्रकाशन, दरीयागंज, नई दिल्ली	2004
10.	स्थगित कल	सामयिक प्रकाशन, दरीयागंज, नई दिल्ली	2004

नाटक

1.	एक और अजनबी	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
2.	जादू का कालीन	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

संपादन

भीतर-बाहर सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर - 1983

स्तंभ लेखन

'रविवार' पत्रिका - 'परिवार' शीर्षक के अंतर्गत

लेख

पर्यावरण और बच्चें - भारत का पर्यावरण नागरिक रिपोर्ट के लिए

लेख संग्रह

चुकते नहीं सवाल - सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली.

संदर्भ-ग्रंथ

अनु.	लेखक	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन	प्र.वर्ष
1	डॉ.अग्रवाल प्रल्हाद	हिंदी कहानी सातवाँ दशक	भारत मुद्रणालय, शाहदरा, दिल्ली 110 032.	1975
2	अग्रवाल बिंदु	हिंदी उपन्याासों में नारी चित्रण	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली - 6	1968
3	डॉ.अमिताभ वेदप्रकाश	हिंदी कहानी के सौ वर्ष	मधुवन प्रकाशन मथुरा.	1987
4	अश्क उपेंद्रनाथ	हिंदी कहानी : एक अंतरग परिचय	नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद.	1967
5	डॉ.अरोडा किरणबाला	साठोत्तरी उपन्यासों में नारी	अन्नपूर्णा प्रकाशन साकेत नगर कानपूर - 208 014	1990
6	डॉ.जैन नीरज	आधुनिक हिंदी उपन्यास: व्यक्तित्व विघटन के निकषपर	निर्मल पब्लिकेशन कबीर नगर, शाहदरा दिल्ली - 110 094	2001
7	जिज्ञासू मोहनलाल	कहानी और कहानीकार	संचयन प्रकाशन कानपुर	1955
8	गुलाबराय	काव्य के रूप	प्रतिभा प्रकाशन 206, हैरकुली दिल्ली.	1954
9	डॉ.टंडन प्रतापनारायण	हिंदी कहानी कला	हिंदी समिती सूचना विभाग उत्तरप्रदेश, लखनऊ	1970
10	डॉ.तिवारी वल्लभदास	हिंदी काव्य में नारी	जवाहर पुस्तकालय मथुरा	1974

अनु.	लेखक	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन	प्र.वर्ष
11	डॉ.उपाध्याय देवराज	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	प्रकाशन ब्युरो सूचना विभाग उत्तरप्रदेश	1957
12	प्रेमचंद	वरदान	हंस प्रकाशन, दिल्ली	1977
13	डॉ.भुतडा घनश्याम	समकालीन हिंदी कहानियों ने नारी के विविध रूप	अतुल प्रकाशन कानपुर	1993
14	डॉ.मठपाल सावित्री	जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी पात्र	मंगल प्रकाशन गोविंद राजियाका रास्ता, जयपुर	1986
15	डॉ.मदान इंद्रनाथ	आधुनिकता और हिंदी साहित्य	लिपि प्रकाशन दिल्ली	1973
16	डॉ.मदान इंद्रनाथ	हिंदी कहानी : एक नयी दृष्टि	लिपि प्रकाशन दिल्ली	1978
17	डॉ.मिश्र सरजूप्रसाद	हिंदी कहानी के आधारस्तंभ	अजब पुस्तकालय कोल्हापुर - 2	1975
18	डॉ.मेहरोत्रा सुमन	हिंदी कहानी में द्वंदव	आर्य बुक डिपो 30- करौलबाग नई दिल्ली - 110 005	1975
19	डॉ.लाल लक्ष्मीनारायण	हिंदी कहानी की शिल्पविधी का विकास	साहित्य भवन प्रयाग	1953
20	वर्मा महादेवी	श्रृंखला की कडियाँ	भारती-भंडार लिडर प्रेस, प्रयाग	1942
21	डॉ.वारद विजया	साठोत्तर हिंदी कहानी और महित्व लेखिकाएँ	विकास प्रकाशन साकेतनगर कानपूर - 14.	1993

अनु.	लेखक	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन	प्र.वर्ष
22	डॉ.वर्मा शीलप्रभा	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	विद्या विहार 106/154, गांधीनगर, कानपूर-12.	1987
23	डॉ.शर्मा मंजू	साठोत्तरी महिला कहानीकार	राधा पब्लिकेशनस नई दिल्ली.	1982
24	डॉ.शेखावत गोरधनसिंह	नयी कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ	राम पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर	
25	डॉ.सरिताकुमार	महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास	राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी रोड, दिल्ली-110 002	1983
26	डॉ.सन्धु मधु	साठोत्तर महिला कहानीकार	सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली.	1984
27	डॉ.सिंह संतबक्श	नयी कहानी : कथ्य और शिल्प	अभिनव भारती इलाहाबाद	1973
28	डॉ.सुमन सुमनकुमार	कहानी और कहानीकार	सूर्य प्रकाशन नयी सडक, दिल्ली - 6	1986
29	डॉ.सुरी योगेश	यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ	चंद्र लोक प्रकाशन कानपुर.	1994
30	डॉ.श्रीवास्तव परमानंद	कहानी की रचना-प्रक्रिया	प्रकाशन कला ग्रंथम, रामबाग, कानपुर.	1965

पत्र - पत्रिकाएँ

1.	सारिका	मई, 1985
2.	रविवार	दिसंबर, 1988
3.	रविवार	मार्च, 1989
4.	प्रकर	मार्च, 1992
5.	गृहशोभा	मार्च, 1999
6.	हिंदुस्थानी जबान	अप्रैल, जून 2001
7.	वागर्थ	जुलै, 2002
8.	साक्षात्कार	अप्रैल, 2003